विषय-सूची

क्रम सं०	नाम	पृ० सं०
१	विषय प्रवेश	१
२	जैनतत्त्वमीमासा के लेखन में प० फूलचन्द्र जी की दृष्टि	७
	१- मतभेद कहाँ-कहाँ है ?	१३
	२- पुस्तक मे कुछ अस्पष्ट, गलत और परस्पर विरोधी बातें	१९
३.	कार्य के प्रति निमत्तो की सार्थकता	२२
	१- एक प्रश्न और उसका समाधान	२७
	२- दूसरा प्रश्न और उसका समाधान	२८
	३- निमित्तो की सार्थकता मे एक अन्य युक्ति	२९
	४- वस्तु स्वरूप स्वतः सिद्ध है	३१
	५- वस्तुस्वरूप प्रतिनियत भी है	३५
	६- वस्तु और वस्तुस्वरूप में परिणमनशीलता भी है	३७

क्र० सं०	नाम	पृ० सं०
७-	परिणमनशीलता के अर्थ मे उत्पाद और व्यय के साथ ध्रौव्य भी गर्भित है	३८
८-	परिणमन के भेद	४३
९-	परिणमन की स्वसापेक्षता और स्वपरसापेक्षता का अभिप्राय	४५
१०-	स्वसापेक्ष परनिरपेक्ष और स्वपरसापेक्ष परिणमनो मे भेद का कारण	४६
११-	दोनो प्रकार के परिणमनो का दायरा	४७
१२-	दोनो प्रकार के परिणमनो मे कार्यकारण भाव की विवेचना का आधार	४९
१३-	निमित्तो की विविधता	५१
१४-	प० फूलचन्द्र जी का अपने अभिमत को पुष्ट करने का एक प्रयास	५९
१५-	प० जी के प्रयास की निरर्थकता	६०
१६-	स्वसापेक्ष परनिरपेक्ष परिणमन के सम्बन्ध मे विवेचन	६९
१७-	स्वपरसापेक्ष परिणमन के सम्बन्ध मे विवेचन	७०
१८-	आकाश द्रव्य का उदाहरण	७१
१९-	दर्पण का उदाहरण	७३

क्रम सं०	नाम	पृ० स०
२०-	आकाश और दर्पण के उदाहरणों मे अन्तर	७४
२१-	दीपक का उदाहरण	७६
२२-	आत्मा का उदाहरण	८०
	(क) वस्तु विज्ञान की दृष्टि मे आत्मतत्त्व	८०
	१- आत्मा की पदार्थ प्रतिविम्बक शक्ति की आवश्यकता	८५
	२- आत्मा की पदार्थ प्रतिविम्बक शक्ति ही दर्शन शक्ति है	८६
	३- दर्शन स्वभावतः अविसवादी होता है	९२
	४- पदार्थ दर्शन का सद्भाव पदार्थ ज्ञान की प्रत्यक्षता का और असद्भाव परोक्षता का कारण है	९४
	५- प्रत्यक्ष और परोक्ष शब्दों का अर्थ	९७
	६- पदार्थ दर्शन के भेद और उनका नियमन	९७
	७- पदार्थ ज्ञान की प्रत्यक्षता और अप्रत्यक्षता का विभाजन	९८

क्रम सं०	नाम	पृ० सं०
	८- दर्शन के स्थलों की विवेचना	९९
	९- प्रकृत में आत्मा का उदाहरण के रूप में स्पष्टीकरण	१०२
(ग)	आध्यात्मिक विज्ञान की दृष्टि में आत्मतत्त्व	१०४
	१- समस्त जीवों का दो वर्गों में विभाजन	१०६
	२- मुक्त और संसारी जीवों का परिमाण	१०६
	३- संसारी जीवों के दो वर्ग—भव्य और अभव्य	१०८
	४- भव्यत्व और अभव्यत्व के अन्य प्रकार	१०९
	५- जीवों और पुद्गलों में एक वैभाविक शक्ति भी है	११०
	६- जीव के भव्यत्व और अभव्यत्व का व्याख्यान	१११
	७- भव्यत्व और अभव्यत्व का शुद्धि शक्ति और अशुद्धि शक्ति के रूप में विवेचन	११४
	८- शुद्धि शक्ति और अशुद्धि शक्ति के प्रतिनियम का आधार	११८

क्रम सं०	नाम	पृ० स०
	९. जीवो का बद्ध स्पष्ट और अबद्ध स्पष्ट रूप मे विवेचन	१२९
	१०. पुद्गलो का भी बद्ध स्पृष्ट और अबद्ध स्पृष्ट रूप मे विवेचन	१३०
	११. जीवो और पुद्गलो मे बद्ध स्पृष्टता और अबद्ध स्पष्टता के आधार पर विशेषता	१३०
	१२- आध्यात्मिक दृष्टि से बन्ध और उसके अभाव का विवेचन	१३४
	१३- बद्ध स्पृष्टता और अबद्ध स्पृष्टता का उपसहार	१३८
२३-	द्रव्यो की अर्थपर्यायें और व्यजनपर्यायें	१४०
	१- अर्थपर्यायो का विवेचन	१४०
	२- व्यजन पर्यायो का विवेचन	१४२
२४-	जीवो का पुद्गल के साथ बद्धतारूप सयोग वास्तविक है	१४५

क्र० स०	नाम	पृ० सं०
२५-	संश्लेष(बद्धता)रूप सयोग की उपचरितता का ग्राह्य अर्थ	१४७
२६-	दो आदि वस्तुओ पर आधारित सयोग, निमित्त-नैमित्तिक व आधाराधेय आदि सम्बन्ध वास्तविक हैं कल्पनामात्र नही हैं	१५४
२७-	निश्चय और व्यवहार के रूप	१८२
२८-	द्रव्यानुयोग की व्यवस्था मे निश्चय और व्यवहार	१९१
२९-	करणानुयोग की व्यवस्था मे निश्चय और व्यवहार	१९४
३०-	चरणानुयोग की व्यवस्था मे निश्चय और व्यवहार	२०१
	१- जीव की भाववती और क्रियावती शक्तियाँ तथा उनके अर्थ	२०३
	२- पुरुषार्थ के विविध रूप	२२०
३१-	तत्त्वार्थसूत्र अ० १० सू० १ के आधार पर निमित्त की कार्यकारिता का समर्थन	२२३

क्र० स नाम पृ० स०

३२- अन्य विवध प्रकार से निमित्त को कार्यकारिता का समर्थन २३६

३३- निमित्त की कार्यकारिता व व्यवहाररत्नत्रय की धर्म रूपता का समर्थन तथा व्यवहार रत्नत्रय का निश्चयरत्नत्रय के साथ साध्यसाधक भाव २६४

३४- (क) योगरूप परिणमन क्रियावती शक्ति का ही होता है ३०६

(ख) योग कर्मों के आस्रवित होने या प्रकृतिबन्ध और प्रदेशबन्ध होने मे कारण है ३०६

(ग) योगो का कषाय (राग-द्वेष) से अनुरजित होना स्थिति बन्ध और अनुभाग बन्ध का कारण है ३०६

(घ) मोह (ज्ञान की अज्ञानरूपता) कर्मबन्ध का साक्षात् कारण नही होता किन्तु कषाय को प्रभावित करता हुआ परपरया कारण होता है ३०६

३५- पापाचरण, पुण्याचरण, व्यवहार धर्म और निश्चय धर्म मे अन्तर ३१५

क्र० स०	नाम	पृ० सं०
३६-	निश्चयधर्म और उपादान कारण की वास्तविकता व व्यवहारधर्म और निमित्त कारण की उपचरितता का अभिप्राय	३२२
३७-	उपचार का विवेचन	३२४
३८-	उपचार अर्थ मे होता है शब्द उसका प्रतिपादक है	३३२
३९-	अर्थ और शब्द के प्रकार तथा शब्द द्वारा अर्थ प्रतिपादन का नियमन	३३६
४०	उपचरित अथ लक्ष्यार्थ और व्यग्यार्थ से भिन्न शब्द का अभिधेयार्थ ही है	३४८
४१-	कार्योत्पत्ति मे पच कारण समवाय का अभिप्राय	३५२
४२-	"तादृशी जायते बुद्धि." इत्यादि पद्यवत स्पष्टीकरण	३६०
४३-	प० प्रवर टोडरमल के मोक्षमार्ग प्रकाशक के उद्धरण का अभिप्राय	३६७